''तू जो स्वर्ग में है''

परमेश्वर का ऐलान है कि ''आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है'' (यशायाह 66:1)। जिस धरती पर हम इस समय रह रहे हैं वह परमेश्वर के पांवों की चौकी ही है, और हम उसके सामने टिड्डियों की तरह हैं (यशायाह 40:22)। प्राकृतिक, अर्थात साधारण मनुष्य परमेश्वर की बातों के गहरे अर्थ को नहीं समझ सकता (1 कुरिन्थियों 2:10, 14) पर हम यीशु की इस बात को पूरी तरह नहीं समझ सकते जिसमें उसने कहा था, ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है'' (मत्ती 6:9)। जो कुछ वह है, और होगा उसकी अधिकतर बातें बताई नहीं गई हैं (1 यूहन्ना 3:2)।

फिर भी, परमेश्वर की कुछ बातें हम पर आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों के द्वारा प्रकट की गई हैं। जिसके परिणामस्वरूप, पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के द्वारा, हमें संसार के विषय में पूरी तरह से अज्ञानता में नहीं रखा गया। परमेश्वर के निवास अर्थात स्वर्ग के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर, हम आने वाले संसार की शक्तियों का अनुभव कर सकते हैं (इब्रानियों 6:5)।

अलग-अलग आकाश (स्वर्ग)

बाइबल कई अलग-अलग आकाशों की बात करती है, परन्तु ''सात आकाशों'' की बात मानवीय साहित्य में ही मिलती है। पवित्र शास्त्र में उल्लिखित एक आकाश वह है जहां पक्षी उड़ते हैं: ''जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें'' (उत्पत्ति 1:20)। पक्षियों, बादलों और वायु के आगे के आकाश में असंख्य तारों, सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों का निवास है। पवित्र शास्त्र में उस क्षेत्र को भी आकाश कहा गया है; ''दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों'' (उत्पत्ति 1:14)।

पक्षियों के आकाश को पहला और तारों के आकाश को दूसरा स्वर्ग कहा जाए या नहीं, मैं नहीं जानता। परन्तु परमेश्वर ने हमें तीसरे स्वर्ग जिसे स्वर्गलोक कहा गया है, से अनजान नहीं रखा है। उसी स्थान पर यीशु और क्रूस पर चढ़ने वाला डाकू गए थे (लूका 23:43), जैसे पौलुस भी गया (2 कुरिन्थियों 12:2, 4)। तीसरे आकाश से पौलुस और यीशु इस पृथ्वी पर लौट आए। बेशक वे स्वर्गलोक में तो गए थे, परन्तु वहां नहीं जहां पिता रहता है; क्योंकि तीसरे आकाश से होकर आने पर यीशु ने कहा था, ''मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया'' (यूहन्ना 20:17)।

परमेश्वर के स्वर्ग का अस्तित्व

अविश्वासी लोग क्रोधित होकर कहते हैं कि खगोल शास्त्रियों को आकाश में परमेश्वर का सिंहासन नहीं मिला था, जो प्रमाणित करता है कि यह केवल एक कल्पना मात्र है। इसी छलावे से वे यह ''प्रमाणित'' करते हैं कि जीवन का अस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि जीवन की भी न तो कोई परिभाषा दी जा सकती है और न ही उसे देखा जा सकता है। क्या स्वर्ग के अस्तित्व पर इसलिए संदेह करना उचित है कि नाशवान दूरबीनें उस अविनाशी परमेश्वर के निवास को ढूंढ़ने में असफल रहीं? यदि अभौतिक स्वर्ग उनकी सीमा में होता तो भी ये भौतिक लैंस उसे नहीं देख सकते थे। ''परमेश्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24); ''आत्मा के हड्डी मांस नहीं होता'' (लूका 24:39), बल्कि वह ''अदृश्य'' (कुलुस्सियों 1:15) है।

फिर, खगोल शास्त्रियों द्वारा विशाल से विशालतम होते जा रहे संसार की निरंतर खोजों से चकित होकर, हम नाशवान मनुष्यों को विनम्र होकर कहना चाहिए, ''हम तो चुप ही रहेंगे, क्योंकि पता नहीं कि दूरबीनों के आगे अभी और क्या है सारे भौतिक संसार के आगे की सब बातें उससे कहीं कम हैं।'' अविश्वासी लोगों को न तो इतना घमंड करना चाहिए और न ही उन्हें अपने ही धोखे में फंसना चाहिए। परमेश्वर करे कि उनके मन भी अय्यूब की तरह विनम्र हो जाएं: ''परन्तु मैंने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात जो बातें मेरे लिए अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था। ... इसलिए ... मैं धूलि और राख में पश्चात्ताप करता हूं'' (अय्यूब 42:3ख-6)।

यह दावा करना कि स्वर्ग का अस्तित्व नहीं है, न केवल यह दिखाता है कि हमें संसार का पूर्ण ज्ञान नहीं है, बल्कि वह उस ज्ञान को भी दिखाना है जो हमारे अस्तित्व के दायरे से बाहर है। वास्तव में, ऐसा दावा अपने आप ही सर्वज्ञता को मान लेता है। स्वर्ग के अस्तित्व से इन्कार करने के लिए पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि यदि एक ही बात हो जिसका मनुष्य को पता न हो, तो यह स्वर्ग का अस्तित्व हो सकता है। फिर, स्वर्ग की वास्तविकता से इन्कार करने के लिए किसी को सर्वव्यापक भी होना चाहिए, क्योंकि यदि एक भी ऐसा स्थान है जहां मनुष्य नहीं गया, तो वह स्वर्ग ही हो सकता है। अविश्वासियों के दावों के बावजूद, अधिक प्रसन्न करने वाला और अधिक युक्तिसंगत, दाऊद का व्यवहार मिलता है:

> हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि
> घमण्ड से भरी है;
> और जो बातें बड़ी और मेरे लिए अधिक कठिन हैं,
> उन में मैं काम नहीं रखता।
> निश्चय मैं ने अपने मन को शान्त और चुप कर दिया है,
> जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मां की गोद में रहता है,
> वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता है
> (भजन संहिता 131:1, 2)।

अविश्वासियों का दावा है कि यह कहना कि यीशु ''ऊपर'' स्वर्ग में उठा लिया गया

(प्रेरितों 1:9) का अर्थ है कि 12 घंटे बाद (पृथ्वी के घूमने के कारण) स्वर्ग ''नीचे'' हो जाएगा। इस कारण वे यीशु और बाइबल पर हंसते हैं। यदि परमेश्वर का निवास भौतिक भी होता, तो भी स्वर्ग एक ही समय हमारे निवास को पूरी तरह से ढंककर पृथ्वी की सभी दिशाओं में होता है। यह विश्वास रखकर कि एकमात्र सचमुच भला और समस्त संसार में ग्रहण किया जाने वाला व्यक्ति जानता था कि वह अपने मित्रों को पिता के घर ले जाने की प्रतिज्ञा करके क्या कह रहा था, उस महान शिक्षक के चरणों में बैठना इससे भी अधिक समझदारी है।

परमेश्वर का आकाश (स्वर्ग)

एक आकाश है जहां पर पिता रहता है, वहां यीशु को छोड़ ''और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा'' (यूहन्ना 3:13) जो स्वर्ग से नीचे आया और पिता के दाहिने हाथ बैठने के लिए फिर लौट गया है। सुलैमान ने परमेश्वर के रहने के स्थान को ''सबसे ऊंचा स्वर्ग'' कहा (1 राजा 8:27)। यशायाह नबी और प्रेरित यूहन्ना को उस भव्य निवास की झलक पाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था, और आपको और मुझे वहां सदा-सदा तक रहने की अनुमति मिलेगी। आदर और महिमा पाकर प्रभु यशब पत्थर और मानिक की तरह सिंहासन पर बैठता है। उसके सिर पर पन्ने की तरह एक मेघ धनुष है। लाखों स्वर्गदूत उसकी स्तुति करते हैं। आंखें और पांव ढके हुए सिराफीम [साराप] सिंहासन के ऊपर इधर-उधर घूमते हुए एक-दूसरे से कह रहे हैं, ''सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है'' (यशायाह 6:3)।

पृथ्वी पर रहते हुए, यीशु परमेश्वर के स्वर्ग में रहने को स्मरण करते हुए लौटने को तड़पता था: ''अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी'' (यूहन्ना 17:5)।

यदि सबसे ऊंचे स्वर्ग जैसा कोई सर्वोत्तम तेजोमय स्थान है, तो मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों पर शासन वहीं से होता है। वहां के और पृथ्वी के प्रत्येक जीव को चाहिए कि उसकी सुनें जो महिमा में अपने सिंहासन पर बैठा है। ''परन्तु यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृथ्वी उसके साम्हने शान्त रहे'' (हबक्कूक 2:20)।

इसलिए मानवीय जीवों को तलाक, नशा, बपतिस्मा, नाचरंग, या किसी ऐसे विषय पर अपने विचार देने के लिए सम्मति बनाने का कोई अधिकार नहीं है। ''मनुष्य ... के डग उसके अधीन नहीं हैं'' (यिर्मयाह 10:23ख) क्योंकि पापी होने के कारण वह अपने सही मार्ग पर नहीं चलता है। सभाएं या परिषद उनकी अपनी ही निर्बलताओं तथा पापों से ऊंची नहीं हो सकतीं, इसलिए मनुष्य परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर परमेश्वर की तरह बात नहीं कर सकता। किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को हमारे लिए धार्मिक नियम बनाने का कोई अधिकार नहीं है।

कई बार प्रचारक मसीही लोगों को उत्साहित करते हैं कि ''जो कलीसिया अच्छी लगे उसी में शामिल हो जाओ।'' बेशक वे न चाहते हों, परन्तु वास्तव में वे सर्वोच्च पिता को गद्दी

से उतार रहे होते हैं। वे चेलों की प्रार्थना के उस भाग ''स्वर्ग में'' को व्यक्त करते हैं। क्या परमेश्वर ने यह नहीं चुना कि मसीही लोग किस कलीसिया में शामिल हों? फिर, न चाहते हुए भी ऐसे प्रचारक पापी मनुष्यों को तो ऊंचा उठाते हैं जबकि उसे ही निकाल देते हैं जो बचाने के योग्य है।

जब मसीही लोगों से यह कहा जाता है कि वे ''अपनी पसंद का'' बपतिस्मा लें, चाहे वह छिड़काव का हो, या उंडेलने का, या डुबकी का, तो कई गलतियां होती हैं। सबसे अधिक बुनियादी गलती यह सोचकर कि बपतिस्मा कैसे भी दिया जाए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बड़ी भूल की जाती है। जब तक मेनोनाइट[1] लोगों की तरह बपतिस्मा लेने वाले को आगे झुकाने या दूसरे बहुत से सम्प्रदायों की तरह पीछे को झुकाने की बात पर विचार नहीं किया जाता, तब तक बपतिस्मे का ''ढंग'' इस शब्द का अपप्रयोग ही है।

रॉबर्ट रिचर्डसन के अनुसार, पहली बार बपतिस्मा देते समय थॉमस कैम्पबैल ने ''तालाब के किनारे निकली एक जड़ पर खड़े होकर उनके [बपतिस्मा लेने वालों के] सिर तब तक पानी में रखे जब तक कि वे उस तरल कब्र में गाड़े नहीं गए।'' पानी में खड़े होकर बपतिस्मा लेने वालों में से एक गम्भीर व्यक्ति ने एन. बी. आर्डमैन से पूछ लिया ''मैं बैठकर बपतिस्मा क्यों नहीं ले सकता?'' गुस निकोल्स एक ऐसे प्रचारक के बारे में बताता है जिसने बपतिस्मा लेने वाले को सीधा नीचे दबाने पर ज़ोर दिया क्योंकि दारोगे को ''तुरन्त'' [straightway; KJV] बपतिस्मा दिया गया था (प्रेरितों 16:33)। यदि ये घटनाएं बपतिस्मे की ''विधि'' नहीं हैं, तो फिर कोई भी ढंग नहीं है। परमेश्वर ने बपतिस्मे की आज्ञा दी, जो कि डुबकी का ही है।

लोगों को ''अपनी पसन्द'' का बपतिस्मा देने की सूचना यहां हमारी मुख्य चिन्ता है। सच्चाई तो यह है, कि पापी मनुष्य अंधेरे में है और वह नहीं जानता कि किस ओर जाना है। जिसने बपतिस्मे की आज्ञा दी वह पाप रहित था और अब भी उस प्रकाश में वास करता है जहां कोई मनुष्य नहीं पहुंच सकता, इसलिए मनुष्य बपतिस्मे की ''विधि'' बनाने का निर्णय लेने का प्रयास करके गलत करता है।

इसलिए, यह प्रार्थना करके कि ''तू जो स्वर्ग में है,'' मैं यह कह रहा हूं कि सम्पूर्ण अधिकार परमेश्वर के पास है। ऐसी प्रार्थना करके मैं न केवल यह मानता हूं कि परमेश्वर के पास सर्वोच्च शक्ति है और केवल वही सर्वशक्ति का मालिक है, बल्कि मैं उसकी शक्तियों को भी मानता हूं; और मैं परमेश्वर की उसके स्वर्ग में होने के कारण महिमा करता हूं। राजा यहोशापात को उसकी स्तुति करते सुनिए:

> हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता? (2 इतिहास 20:6)।

राजा सुलैमान द्वारा नाशवान मनुष्य को अपनी हर बात सावधानी से कहने का सुझाव देने का एक कारण था क्योंकि ''परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है; इसलिए तेरे वचन थोड़े ही हों'' (सभोपदेशक 5:2)।

स्वर्ग में, पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, कल आज और हमेशा उसके अधिकार को मानने के अलावा, मैं ''तू जो स्वर्ग में है'' प्रार्थना करते हुए उस परमप्रधान की एक अन्य विशेषता की घोषणा करता हूं। मेरे कहने का भाव यह है कि अमेरिका हो या चीन, दिन हो या रात हर जगह हर समय, उसकी आंखें मनुष्य के पुत्रों पर लगी रहती हैं (भजन 11:4)। वह यह सब कैसे कर सकता है मुझे इसकी समझ नहीं है; ऐसा ज्ञान मेरे लिए बहुत ही अद्‌भुत है। यह बहुत ही ऊंचा मेरी पहुंच से बहुत दूर है (भजन 139:16)। परमेश्वर मेरे बैठने, मेरे लेटने, और मेरे चलने के मार्ग को जानता है। बहुत पहले से वह मेरी सोच को जानता है। मेरे जन्म लेने से पहले ही, मेरे लिए उसने योजनाएं बना ली थीं: ''तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन-दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे'' (भजन संहिता 139:16)।

सब जगह देखने वाली आंख जानती है कि कब कोई कैन खेतों में उठकर किसी निर्दोष की हत्या करेगा। वह बाबुल देश के सुन्दर ओढ़ने, चोगे, चांदी के सिक्के, शेकेल और सोने की ईंट चुराने वाले आकान को देखता है। हर जगह विद्यमान और सब कुछ जानने वाले स्वर्ग के उस निवासी ने एक बूढ़े और अंधे नबी को एक धोखा देने वाले का अभिवादन करने के योग्य बनाया: ''हे यारोबाम की स्त्री! भीतर आ; तू अपने को क्यों दूसरी स्त्री बनाती है?'' (1 राजा 14:6)। जब चुपके से आए गेहाज़ी ने कपड़े और चांदी पाने के लिए झूठी कहानी गढ़ी, तो स्वर्ग से देखने वाले ने इस अविश्वासी सेवक पर हर समय नज़र रखने की एलिशा नबी को शक्ति दी: ''... तब वह पूरा हाल मुझे मालूम था ...'' (2 राजा 5:26)।

हर जगह देखने वाली उसकी आंख के कारण दुष्ट लोगों को भय से कांपना चाहिए, और भले लोगों को उससे बड़ी सांत्वना मिलनी चाहिए। वही आंख जो बुराई को देखती है हर एक भले काम को भी देखती है। परमेश्वर धर्मी है; जब आप मुसीबत में फंसे लोगों की सेवा करते हैं तो वह आपके विश्वास और प्रेम से किए कार्य को भूलते नहीं हैं। न केवल उसकी आंखें किसी बालक पर हुए अत्याचार को ही देखती हैं, बल्कि वह अपने छोटे बच्चों पर किए जाने वाले करुणा के हर काम को भी देखता है।

स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा ध्यान रखना

यह विचार कितना मूल्यवान है कि स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठे परमेश्वर की नज़र में आने व प्रिय बनने के लिए जरूरी नहीं कि आप भलाई के बड़े-बड़े काम करें। यदि आप किसी को ठण्डे पानी का गिलास ही पिला सकते हैं, तो अवश्य पिलाएं; आपको उसका प्रतिफल अवश्य मिलेगा। हो सकता है कि किसी ज़रूरतमंद परिवार के द्वार पर आटे की थैली रखते हुए आपको कोई मनुष्य न देखे, परन्तु आपका पिता जो गुप्त में देखता है

आपको ब्याज समेत उसे लौटा देगा।

ऐसा भी समय आया होगा जब आप अपने पड़ोसी के साथ स्वर्ग से मिले सुसमाचार की बात करके उसे शुद्ध करने वाले लहू के फव्वारे में धोने के लिए ले गए हों। हो सकता है कि प्रचारक ने या किसी अन्य ने आपकी तारीफ न की हो, परन्तु आपने अपना काम बदले में कुछ पाने के लिए नहीं किया। यीशु को ग्रहण करके आप अपने पापों से स्वतन्त्र होकर धार्मिकता का आनन्द ले रहे थे, और चाहते थे कि ऐसे शानदार और सदा तक रहने वाले अनुभवों को अपने पड़ोसी के साथ भी बांटें। सब कुछ देखने वाली आंख ने आपके द्वारा किए गए विनम्र प्रयास से अपने पड़ोसी को समझाने के उत्साह को देखा; एक पापी को बदलने के आपके प्रयास को इसने आपके हृदय में झांका। परमेश्वर चाहता है कि आप आकाश के तारों की तरह चमकें, क्योंकि उसने वायदा किया है कि ''जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान रहेंगे'' (दानिय्येल 12:3)।

यह विचार कितना तसल्ली देने वाला और विश्वास को बढ़ाने वाला है कि परमेश्वर सब कुछ देख रहा है! लोग आपके बारे में कुछ भी कहें या आपके साथ कैसा भी बर्ताव करें, सब कुछ देखने वाले के पास सच्चे मन से प्रार्थना करके, आप बड़े वायदे को पा सकते हैं: ''यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में सब अपना सामर्थ दिखाए'' (2 इतिहास 16:9)।

स्वर्ग निकट ही है

यह तथ्य कि प्रभु बहुत ऊंचे पर स्वर्ग में उठाया गया, हमारे परमेश्वर को दूर का परमेश्वर नहीं बना देता। यह तो सत्य है कि वह सबसे ऊपर है, परन्तु वह सब में और सबके बीच में ही है (इफिसियों 4:6)। वह न केवल स्वर्ग में ही शासन करता है, बल्कि जो लोग मसीह के हैं, उनके मनों में भी रहता है। आप जब सुसमाचार की आज्ञा को मानते हैं तो ऊपर से अतिथि आते हैं। आपके बपतिस्मा लेने के समय, परमेश्वर दान के रूप में और आपके अनन्त छुटकारे की गारन्टी के रूप में आत्मा को भेजता है (प्रेरितों 2:38; 5:32; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13, 14)। पवित्र आत्मा के अतिरिक्त (1 कुरिन्थियों 6:19) दो अन्य परमप्रिय लोग भी आते हैं: ''मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे'' (यूहन्ना 14:23)।

यदि आप मुझसे पूछें कि अपने मन्दिर में बैठने वाला (भजन 11:4) स्वर्ग का परमेश्वर आप में भी कैसे रह सकता है, तो मैं केवल इतना ही कह सकता हूं, ''मुझे नहीं पता। मैं तो केवल इतना ही जानता हूं कि वह मुझ में है।'' परमेश्वर विश्वासयोग्य है (2 तीमुथियुस 2:13), और पवित्र शास्त्र गलत नहीं हो सकता (यूहन्ना 10:35)। मसीह स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ बैठा है (1 पतरस 3:22), परन्तु प्रभु के प्रत्येक दिन वह अपने पवित्र लोगों [मसीहियों] के साथ पृथ्वी पर प्रभु भोज में शामिल होता है (मत्ती 26:29)। उसी समय वह उसके नाम में किसी छोटी सी कुटिया में एकत्रित हुए दो या तीन लोगों में महिमा पा सकता है (मत्ती 18:20)। पिता के महिमा पाए हुए पुत्र और भक्त लोगों में

उसकी निकटता को शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता, परन्तु वे बातें जो लम्बे समय से हम जानते हैं और उनके लिए धन्यवाद देते हैं, हमें आश्वासन देती हैं। यशायाह ने इस प्रकार से लिखा था:

> क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र है, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं (यशायाह 57:15)।

जब भी प्रार्थना करें, तो अपने पिता से प्रार्थना करें जो स्वर्ग में है।

पाद टिप्पणियां

[1]मेनोनाइट यूरोप में 16वीं शताब्दी में आरम्भ हुए एक प्रोटैस्टेंट सम्प्रदाय को कहा जाता है, जो शिशुओं के बपतिस्मे का विरोध करता है और केवल विश्वासियों को बपतिस्मा देता व सम्प्रदाय के सदस्यों को विवाह करने से मना करता है, और सादा जीवन और पहरावे के लिए प्रसिद्ध है। यह नाम क्रिसियन धार्मिक अगुवे *मेनो* साइमन (1492–1559) से लिया गया।